



رَحْمَةً لِلْعَلَمَيْنَ  
دَهْمَاتُولِ لِلِّلَّٰمَاءِ الْمَنِيْجِ



لَوْ عَرَفْتَهُ لَا حَبَّتَهُ

अगर तुम उन्हें जान लो तो  
तुम उनसे प्यार करने  
लगो ।



HINDI  
LANGUAGE

02

+966507 472706

@darulhudaudupi  
www.darulhudaudupi.org



بسم الله الرحمن الرحيم



# The Prophet of Mercy (Peace be upon him) Exhibition Hall

Under the supervision of:  
**DAR-UL-HUDA, UDUPI**  
**Karnataka – India**

Presents....

THE PROPHET OF MERCY

اللهُ أَكْبَرُ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
نَبِيُّ الْمُحْمَدُ



رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ  
دَهْمَاتُل لِلِّلَّا مَمِّنْ



وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِلْعَالَمِينَ

(الأنبياء : 107)

(हे पैगंबर!) और हमने आपको सारी दुनिया के लिए दया के रूप में ही भेजा है।

(सुरह अंबिया: 107)

HINDI

LANGUAGE

01

+966507 472706



@darulhudaudupi

www.darulhudaudupi.org

لَوْ عَرَفْتُهُ لَا حَبَّبْتَهُ

अगर तुम उन्हें जान लो तो  
तुम उनसे प्यार करने  
लगो ।

HINDI  
LANGUAGE

02

+966507 472706



@darulhudaudupi  
www.darulhudaudupi.org

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "دَخَلَتِ امْرَأَةٌ النَّارَ فِي هَرَّةٍ رَبَطْتُهَا، فَلَمْ تُطْعِمْهَا وَلَمْ تَدْعُهَا تَأْكُلُ مِنْ حَشَاشِ الْأَرْضِ". (صحيح البخاري: 3318)

अब्दुल्लाह इब्राहिम (रदियल्लाहु अनहुमा) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बयान फ़रमाया: एक महिला ने एक बिल्ली की वजह से जहन्नम/नर्क में प्रवेश किया, उसने बिल्ली को बांधे रखा ना तो उसे भोजन दिया और ना ही खुला छोड़ा कि वह कीड़े मकोड़े ही खाकर अपनी जान बचा लेती। (सहीह बुखारी: 3318)



عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُبَسِّطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ أَوْ يُسَأَلَهُ فِي أُثْرِهِ فَلَيَصِلْ رَحْمَةً" (صحيح البخاري: 2067)

अनस इब्न मालिक (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है, कहते हैं:  
मैंने अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को  
फ़रमाते हुए सुना: जो व्यक्ति अपनी रोज़ी-रोटी में बढ़ोतरी  
चाहता हो या लंबे समय तक जीना चाहता हो तो उसे  
चाहिए कि वह अपने परिजनों के साथ अच्छा  
व्यवहार करे। (सहीह बुखारी: 2067)



عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: " الرَّاحِمُونَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمَنُ، ارْحَمُوا مَنْ فِي الْأَرْضِ يَرْحَمُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ، (جامع الترمذى: 1924)

अब्दुल्लाह इब्न अम्र (रदियल्लाहु अनहुमा) से वर्णित है, उन्होंने कहा कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: दया करने वालों पर अर-रहमान (अत्यंत दयालु/ मेहरबान अल्लाह) भी दया करता है, तुम लोग धरती वालों पर दया करो आसमान वाला तुम पर दया करेगा। (तिर्मिज़ी: 1924)



عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (مَا زَالَ جِبْرِيلُ يُوَصِّيُ بِالْجَارِ، حَتَّىٰ ظَنَّتُ أَنَّهُ سَيُورَّتُهُ)

متفق عليه : (صحيف البخاري: 6015 و صحيح مسلم: 2625)

अबदुल्लाह इब्राहिम उमर (रदियल्लाहु अन्हूमा) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : मुझे (अल्लाह के संदेशवाहक फरिश्ता) जिबरील (अलैहिस्सलाम) लगातार पड़ोसी के साथ (अच्छे आचरण) का आग्रह करते रहे यहां तक कि मुझे लगने लगा कि वे पड़ोसी को सम्पत्ति का भी उत्तराधिकारी घोषित कर देंगे । (सहीह बुखारी : 6015, सहीह मुस्लिम : 2625)



عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رضيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَأَنَا وَكَافِلُ الْيَتَامَةِ فِي الْجَنَّةِ هَكُذَا". وَأَشَارَ بِالسَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى، وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا. (صحيح البخاري: 5304)

سہل ابن سعد رضی اللہ عنہ قال: قال رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "وَأَنَا وَكَافِلُ الْيَتَامَةِ فِي الْجَنَّةِ هَكُذَا". وَأَشَارَ بِالسَّبَابَةِ وَالْوُسْطَى، وَفَرَّجَ بَيْنَهُمَا شَيْئًا. (صحيح البخاري: 5304)

سہل ابن سعد (رَدِیْلَلَّٰهُ عَنْہُ) کہتے ہیں کہ اللہ عَزَّوجَلَّ کے پیغمبر (سَلَّمَ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖہ وَسَلَّمَ) نے فرمایا : میں اور انناٹ/یتیم بچوں کا پالن پوषن کرنے والے جنّت/سُرگ میں اسے اک ساٹھ ہوں گے، پیغمبر ساہب نے اپنی دو ٹینگلیوں - ترجیٰ اور مधیما - کو میلاتے ہوئے - جن کے بیچ ہلکی سی رخاںی جگہ ثی - ایشارا کیا ।

(سہیہ بوعظاً : 5304)



رَبَّنَا وَأَبْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتَّلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمْ  
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُرِزِّ كَيْمَهُ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(البقرة : 129)

हे हमारे रब! उन लोगों में उन्हीं में से ऐसा पैग़ंबर भेज दे  
जो उनके सामने तेरी आयातें पढ़ें, किताब (कुरआन)  
व हिक्मत (हदीस) की शिक्षा दें और उनके  
दिलों को पवित्र कर दे, निसंदेह तू बहुत  
प्रभुत्वशाली और ग्यान वाला है।  
(सूरह अल-बकरह: 129)



۱۱۱۱۱

وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي أَسْمُهُ أَحْمَدُ

(الصف: 6)

(پیغمبر ایسا (علیہ السلام) نے کہا) میں اسے پیغمبر کے آگامن کی خوشخبری دےنے والा ہੁਣ جو میرے باਦ آएگا، اسکا نام احمد (سلام اللہ علیہ و سلیمانہ) ہوگا ।

(سُورہ اس-ساف: 6)



لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ  
حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَوْفٌ رَّحِيمٌ

(التوبه: 128)

तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़ाम्बर का आगमन हुआ है जो तुम्ही मे से हैं, उनको तुम्हारे नुक़सान की बातें भारी लगती हैं, वो तुम्हारे फ़ायदे के लिए उत्सुक रहते हैं, वो ईमान वालों के लिए बड़े कृपालु और दयालू हैं।

(सूरह अत-तौبह: 128)



عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (يَا عُقْبَةَ بْنَ عَامِرَ: صِلْ مَنْ قَطَعَكَ، وَأَعْطِ مَنْ حَرَمَكَ، وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ)

(مسند أحمد 4/158)

उक्कबा इब्राहिम आमिर (रदियल्लाहु अन्हू) कहते हैं कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुझ से कहा: हे उक्कबा! जो तुम से सम्बंध तोड़े उस से संबंध जोड़ो, जो तुम्हें वंचित करे उसे (उपहार/दान) दो और जो तुम पर अत्याचार करे उसे क्षमा कर दो। (मुस्नद अहमद : 4/158)



عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " خَيْرٌ كُمْ خَيْرٌ كُمْ لِأَهْلِهِ ، وَأَنَا خَيْرٌ كُمْ لِأَهْلِي ."

(جامع الترمذی: 3895)

आइशा (रदियल्लाहु अन्हा) से वर्णित है, कहती हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: तुम में सबसे उत्तम वो है जो अपने परिवार के लिए अच्छा हो, और मैं अपने परिवार के लिए तुम में सबसे अच्छा हूं।

(तिर्मज़ी :3895)





عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :  
”وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّمَا يُبَعِّثُ إِلَى قَوْمٍ مِّنْ خَاصَّةٍ وَبُعِثْتُ إِلَى النَّاسِ عَامَّةً“

(مسند أحمد: 14264)

जाबिर इब्र अबदुल्लाह (रदियल्लाहु अन्हू) कहते हैं कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : पहले पैग़ाम्बरों को किसी विशेष समुदाय के लिए भेजा जाता था जबकि मुझे समस्त लोगों के लिए पैग़ाम्बर बनाकर भेजा गया ।  
(मुसनद अहमद : 14264)



عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ كَانَ  
لَا يَأْنُفُ أَنْ يَمْشِي مَعَ الْأَرْمَلَةِ وَالْمُسْكِينِ فَيَقْصِدِي لَهُ الْحَاجَةَ.  
(سنن النسائي: 1414)

अब्दुल्लाह इब्राहिम अबी अवफा (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) विधवा महिलाओं और ग़रीब लोगों के साथ उनकी ज़रूरत पूरी करने के लिए चलने में कभी शर्म महसूस नहीं करते।

(नसाई: 1414)



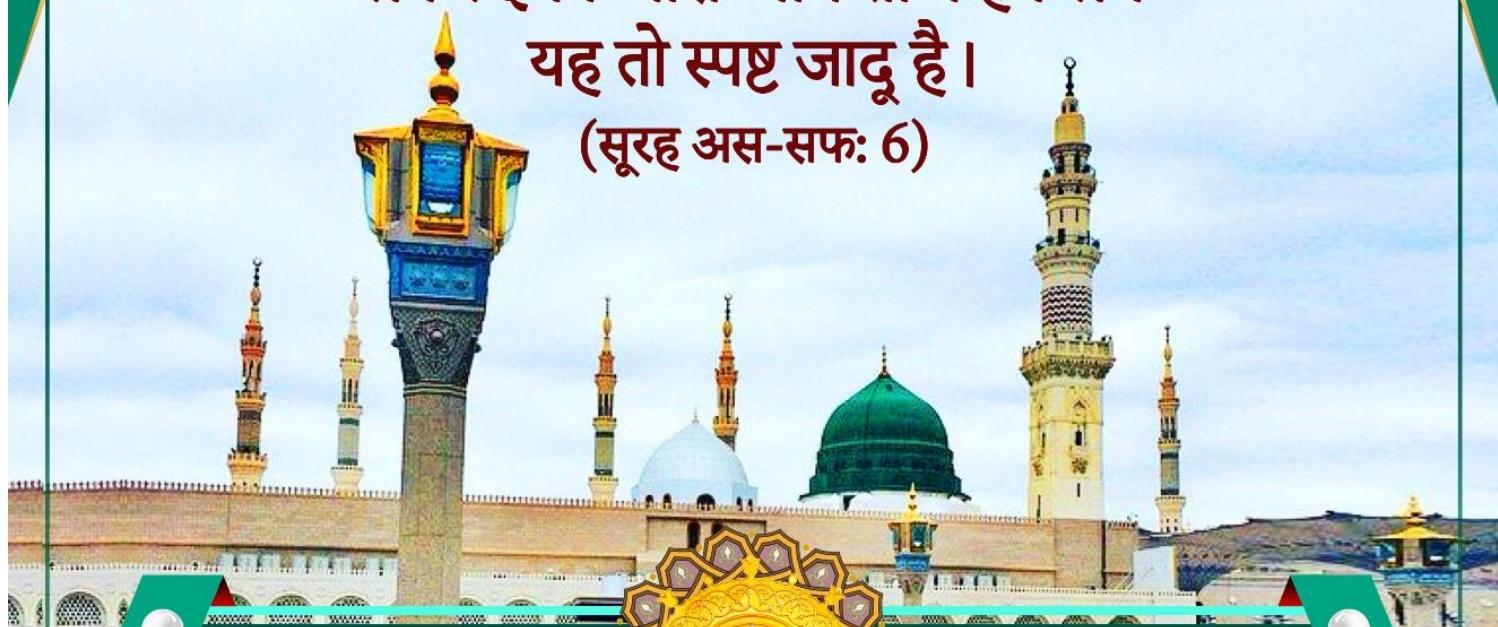
عَنْ وَاثِلَةَ بْنِ الْأَسْقَعِ عَنِ النَّبِيِّ قَالَ: إِنَّ اللَّهَ أَصْطَطَ فِي كِنَائِسَةٍ  
مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ، وَاصْطَطَفَ قُرْبَيْشًا مِنْ كِنَائِسَةٍ، وَاصْطَطَفَ مِنْ قُرْبَيْشِ  
بَنْيِ هَاشِمٍ، وَاصْطَطَفَنَا مِنْ بَنْيِ هَاشِمٍ (صَحِيحُ مُسْلِمٍ: 2276)

वासिला इब्र असक़ा (रदियल्लाहु अन्हू) वर्णन करते हैं कि  
पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: अल्लाह  
ने इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के वंश से किनाना को  
चुना, किनाना के वंश से कुरैश को चुना, कुरैश के  
वंश से बनी हाशिम को चुना और बनी हाशिम  
के खानदान से मुझे चुना।  
(सहीह मुस्लिम: 2276)



وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا  
بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَأَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي أَسْمُهُ أَحْمَدُ فَلَمَّا  
جَاءَهُمْ بِالْبُيُّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ (سورة الصاف : 6)

और उस समय को याद करो जब ईसा इन्ह मरयम (अलैहिमस्सलाम) ने कहा: हे बनी इस्लाईल (यहूद)! मैं तुम्हारे लिए अल्लाह का पैगंबर हूं, मैं अपने पहले आने वाली किताब तौरात की तस्दीक करने वाला हूं तथा ऐसे पैगंबर की खुशखबरी देने वाला हूं जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा, फिर जब वह खुले प्रमाण लेकर इनके पास आये तो कहने लगे यह तो स्पष्ट जादू है। (सूरह अस-सफः 6)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: قِيلَ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، ادْعُ عَلَى الْمُشْرِكِينَ. قَالَ: "إِنِّي لَمْ أُبَعِّثْ لَعَانًا، وَإِنَّمَا بَعَثْتُ رَحْمَةً".

(صحيح مسلم: 2599)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं एक बार कहा गया: हे अल्लाह के पैगंबर! मुश्रिकीन (बहुइश्वरवादियों) के लिए आप बहुआ करें, आप ने उत्तर दिया कि मुझे अभिशाप देने वाला बनाकर नहीं भेजा गया बल्कि मुझे कृपा और दया बनाकर भेजा गया है।  
(सहीह मुस्लिम 2599)



وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ اذْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا  
الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاؤُهُ كَانَهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ

(سورة فصلت: 34)

भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती, बुराई का उत्तर भलाई से दो, फिर देखना जिससे तुम्हारी दुश्मनी है वो ऐसा बन जाएगा जैसे जिगरी दोस्त हो।  
(सूरह फुस्सिलत: 34)



عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍ وَرَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ قَتَلَ نَفْسًا مُعَاهَدًا، لَمْ يَرِدْ حَرَائِقَ الْجَنَّةِ، وَإِنَّ رِيحَهَا يُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عَامًا". (صحيح البخاري: 6914)

अब्दुल्लाह इब्र अम्र (रदियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:  
जिसने किसी मुआहद (ऐसा व्यक्ति जिसे एक मुस्लिम द्वारा सुरक्षा दी गई हो)  
की हत्या की तो वो जन्मत की खुशबू (स्वर्ग की सुगंध) भी नहीं पा सकेगा, जबकि जन्मत की खुशबू 40 साल की दूरी से महसूस की जा सकती है।  
(सहीह बुखारी: 6914)




عَنْ أَنَسَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: خَدَمْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَشْرَ سِنِينَ، فَمَا قَالَ لِي: أَفِي، وَلَا: لِمَ صَنَعْتَ؟ وَلَا: أَلَا صَنَعْتَ. (صحيح البخاري: 6038)

انس اब्न मालिक (रदीयल्लाहु अन्हू) بیان کرتے ہیں کہ  
میں نے اللہ کے پیغمبر (سالللہاہु اللہی و ساللہم)  
کی 10 سال تک سेवा کی  
لेकن آپ نے کभی مुझے  
उफ (ہونگا) تک نا کیا  
اور نا کभی یہ کہا کی  
फلانا کام کیوں کیا  
اور فلانا کام کیوں  
نہیں کیا ।  
(سہیہ بخاری :6038)



عَنْ أَبْنَىٰ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، قَالَ: وُجِدَتِ امْرَأَةٌ مَقْتُولَةً فِي بَعْضِ  
مَغَازِي رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَنَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ  
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ قَتْلِ النِّسَاءِ وَالصِّبِيَّاَنِ۔ (صحيح البخاري: 3015)

اب्दुल्लाह इब्न उमर (रदियल्लाहु अन्हूमा) कहते हैं कि  
अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के  
जमाने में किसी युद्ध में एक महिला पाई गई जिसकी हत्या  
हो गई थी, तो पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)  
ने युद्ध में महिलाओं और बच्चों को क़त्ल  
करने से मना कर दिया।  
(सहीह बुखारी: 3015)



عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : فَوَاللَّهِ لَا نَ يَهْدِي اللَّهُ بِكَ رَجُلًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرٌ النَّعَمُ . " (صحيح البخاري : 3009)

سہل بن سعد رضی اللہ عنہ قال: قال النبي صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَوَاللَّهِ لَا نَ يَهْدِي اللَّهُ بِكَ رَجُلًا خَيْرٌ لَكَ مِنْ أَنْ يَكُونَ لَكَ حُمْرٌ النَّعَمُ . " (صحيح البخاري : 3009)



فِيمَا تَقْضِيهِمْ مِّيشَاقُهُمْ لَعَنَّا هُمْ وَجَعَلُنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَّةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًا مِّمَّا ذَكَرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَلُّعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (المائدہ : 13)

फिर इनके वादा (वचन) तोड़ने की वजह से हमने इन पर अभिशाप भेजा और इनके दिलों को कठोर कर दिया, यह लोग कलिमों (पवित्र वाक्यों) को उनके उचित स्थान से फेरबदल करते हैं, इनको जो नसीहत की गई थी इसका बहुत बड़ा हिस्सा ये लोग भुला बैठे हैं, आप को बराबर उनकी किसी ना किसी स्थियानत (धोके) की खबर मिलती रहेगी, हाँ इनमें से थोड़े लोग हैं जो ऐसे नहीं हैं, अतः आप इनको क्षमा करें और माफ करें, निसंदेह अल्लाह उपकार करने वालों से प्रेम करता है।  
(सूरह अल-ਮाइदह: 13)



عَنْ أَبِي قَتَادَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :  
إِنِّي لَا قَوْمٌ فِي الصَّلَاةِ أُرِيدُ أَنْ أَطْوَلَ فِيهَا، فَأَسْمَعُ بُكَاءَ الصَّبِيِّ  
فَأَتَجَوَّزُ فِي صَلَاةٍ؛ كَرَاهِيَّةً أَنْ أُشْقَى عَلَى أُمِّهِ". (صحيح البخاري: 707)

अबू क़तादा (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मैं लंबी नमाज़ पढ़ने की इच्छा से खड़ा होता हूं लेकिन जब किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो नमाज़ को थोड़ा जल्दी अदा कर लेता हूं क्योंकि उसकी माँ को तकलीफ़ में डालना बुरा लगता है।  
(सहीह बुखारी: 707)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ  
صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ : " لَا تُنْزَعُ الرَّحْمَةُ إِلَّا مِنْ شَقِّيٍّ "  
(سنن أبي داؤد: 4942)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैंने क़ासिम के पिता (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को कहते हुए सुना: दया का गुण सिर्फ उसी व्यक्ति से छीना जाता है जो बदक़िस्मत होता है।  
(अबू दाऊद : 4942)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اللَّهُمَّ إِنِّي أُخْرِجُ حَقَّ الْمُسْعِفِينَ : الْيَتِيمَ وَالْمَرْأَةَ .

(سنن ابن ماجه: 3678)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: हे अल्लाह! मैं दो दुर्बल जनों अर्थात् यतीम/अनाथ और महिला के अधिकार हनन को हराम ठहराता हूं।

(इन्ने माजह: 3678)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "السَّاعِي عَلَى الْأَرْمَلَةِ وَالْمُسْكِينِ كَالْمُجَاهِدِ فِي سَبِيلِ اللَّهِ، أَوْ الْقَائِمُ اللَّيْلَ الصَّائِمُ النَّهَارَ". (صحيح البخاري: 5353)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: विधवाओं और फ़कीरों के काम आने वाला व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले के बराबर है, या रात भर नमाज़ अदा करने और दिन को रोज़ह रखने वाले के बराबर है।

(सहीह बुखारी: 5353)



فِيمَا رَحْمَةٌ مِّنَ اللَّٰهِ لِنَتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًا غَلِيلًا قُلْ لَا نَفَضُوا  
مِنْ حَوْلِكَ فَاغْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا  
عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّٰهِ إِنَّ اللَّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ (آل عمران: 159)

हे पैग़ंबर! आप अल्लाह की कृपा से नर्मदिल हैं, अगर आप अभद्र भाषा और कठोर दिल वाले होते तो सब आपके पास से छट जाते, अतः आप लोगों को क्षमा करते रहें, उनके गुनाहों की माफ़ी की दुआ करते रहें और कोई भी काम हो उसके लिए उनके साथ विचार-विमर्श भी किया करें, फिर जब आप किसी काम का संकल्प ले लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, निसंदेह अल्लाह भरोसा करने वालों से प्रेम करता है।  
(सूरह आल-इमरान :159)

عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "مَنْ لَا يَرْحِمُ النَّاسَ؛ لَا يُرْحَمُ اللّٰهُ عَزٌّ وَجَلٌّ". (صحيح مسلم: 2319)

जरीर इब्न अब्दुल्लाह (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति लोगों पर दया और रहम ना करे अल्लाह भी उस पर रहम नहीं करता।  
(सहीह मुस्लिम: 2319)



عَنْ أَبِي صَالِحٍ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنَادِيهِمْ : " يَا أَيُّهَا النَّاسُ ، إِنَّمَا أَنَا رَحْمَةٌ مُهْدَأةٌ " .

(سنن الدارمي 15)

अबू सालिह (रहमतुल्लाहि अलैह ) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) लोगों को आवाज़ देते : हे लोगो! मैं दया व रहम का तोहफा/उपहार हूं ।  
(सुनन ए दारिमी :15)



۱۱۱۱

يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ

(البقرة: 185)

अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है,  
मुश्किल नहीं चाहता ।  
(सूरह बक़रह: 185)



عن أَنَّسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَقُولُ : جَاءَ شَيْخٌ يُرِيدُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ، فَأَبْطَأَ الْقَوْمَ عَنْهُ أَنْ يُؤْسِعُوا لَهُ ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَرْحَمْ صَغِيرَنَا ، وَلَيْوَقِرْ كَبِيرَنَا " (جامع الترمذى: 1919)

अनस इब्र मालिक (रदियल्लाहु अन्हु) वर्णन करते हैं कि एक बूढ़े सज्जन, पैग़ाबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मिलने के लिए आए, लोगों ने उन्हें रास्ता देने में थोड़ी सुस्ती दिखाई तो पैग़ाबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: वह व्यक्ति हम में से नहीं है जो अपने छोटों पर रहम/दया ना करे और अपने बड़ों की इज़्ज़त ना करे।  
(तिर्मिज़ी :1919)



عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا، وَبَشِّرُوا وَلَا تُنَفِّرُوا".

(صحيح البخاري: 69)

अनस इब्न मालिक (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: (हर मामले में) आसानी करो, (किसी मामले को) मुश्किल ना बनाओ, खुशी बाँटो, नफ्रत ना फैलाओ। (सहीह बुखारी: 69)





عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ رَجُلًا رَأَى كُلُّثُرًا يَأْكُلُ التَّرَى مِنَ الْعَطَشِ، فَأَخْذَ الرَّجُلُ خُفَّةً فَجَعَلَ يَغْرِفُ لَهُ بِهِ حَتَّى أَرْوَاهُ، فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ، فَأَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ". (صحيح البخاري: 173)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बयान करते हैं: एक व्यक्ति ने एक कुत्ते को प्यास के मारे कीचड़ खाते हुए देखा तो उस व्यक्ति ने अपना मौज़ा उतारा और उस में पानी भरकर कुत्ते को पिलाने लगा, यहाँ तक कि उसकी प्यास बुझ गई, अल्लाह को उस व्यक्ति का काम बहुत पसंद आया, इसलिए उसे जन्मत में दाखिल कर दिया। (सहीह बुखारी: 173)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: إِنَّ الرَّحْمَةَ شَجَنَةٌ مِنَ الرَّحْمَنِ، فَقَالَ اللَّهُ: مَنْ وَصَلَكَ وَصَلْتَهُ، وَمَنْ قَطَعَكَ قَطَعْتَهُ". (صحیح البخاری: 5988)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: रहम/दया का संबंध अर-रहमान (अत्यंत दयालू अल्लाह) से है, अल्लाह कहता है : (हे रहम!) जो तुझे जोड़े रखता है मैं उस को स्वयं से जोड़े रखता हूं और जो तुझे तोड़ता है मैं उस से अपना संबंध तोड़ लेता हूं। (सहीह बुखारी: 5988)



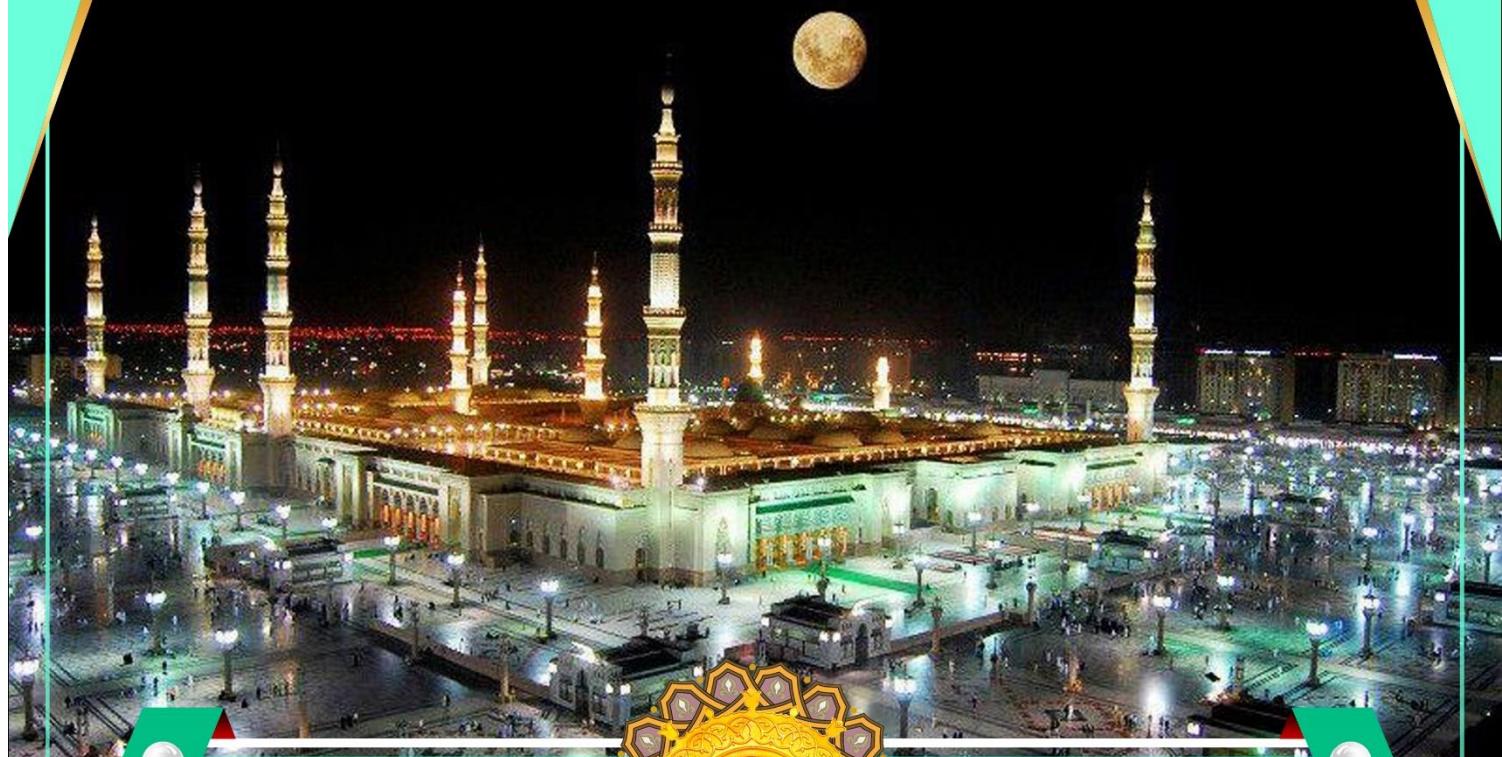
عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُسَمِّي لَنَا نَفْسَهُ أَسْمَاءً، فَقَالَ: "أَنَا مُحَمَّدٌ، وَأَحْمَدُ، وَالْمُقْتَفِي، وَالْحَاشِرُ، وَنَبِيُّ التَّوْبَةِ، وَنَبِيُّ الرَّحْمَةِ". (صحيح مسلم: 2355)

अबू मूसा अशअरी (रदियल्लाहु अन्ह) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमारे सामने अपने कुछ नाम बताए और कहा: मैं मोहम्मद (प्रशंसा के लायक) हूं, अहमद (प्रशंसा करने वाला) मुक़फ़्फी (दूसरे नबियों के पदचिन्ह पर चलने वाला) हूं, हाशिर (एकत्रित करने वाला) हूं, नबियुत तौबा (माफी दिलाने वाला नबी) हूं और नबियुर रहमह (दया वाला नबी) हूं। (सहीह मुस्लिम: 2355)



فَلَعَلَكَ بَاخِعُ نَفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ  
إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسْفًا (الكهف : 6)

(हे नबी!) ऐसा लगता है कि अगर ये लोग इस संभाषण (कुरआन) पर ईमान ना लाएं तो आप अपने प्राण ही त्याग देंगे।  
(सुरह अल-कहफः 6)



عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "فُكُوا الْعَانِي يَعْنِي الْأَسِيرَ وَأَطْعِمُوا الْجَائِعَةَ، وَعُودُوا الْمَرِيضَ" . (صحيح البخاري: 3046)

अबू मूसा अशअरी (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: कैदियों को छुड़ाया करो, लोगों को खिलाया करो और मरीज़ (रोगी) के हाल-चाल की खबर लिया करो। (सहीह बुखारी: 3046)



عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: إِنَّ اللَّهَ لَمْ يَعْتَنِي مُعَنِّيًّا، وَلَا مُتَعَنِّيًّا، وَلَكِنْ بَعْثَنِي مُعَلِّيًّا مُمِيسِّرًا" . (صحيح مسلم: 1478)

जाबिर इब्न अब्दुल्लाह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: निसंदेह अल्लाह ने मुझे कठोर और नुक़सान पहुंचाने वाला बनाकर नहीं भेजा बल्कि उसने मुझे चीज़ों को आसान करने वाला शिक्षक बना कर भेजा है।  
(सहीह मुस्लिम: 1478)



عَنْ أَبْنَى عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : " لَا تَتَخَذُوا شَيْئًا فِيهِ الرُّوحُ غَرَصًا "

(صحیح مسلم : 1957)

अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रदियल्लाहु अन्हूमा) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: ऐसी किसी चीज़ को अपना (तीर /हथियार का) निशाना/लक्ष्य ना बनाओ जिसमें रुह /आत्मा हो ।  
(सहीह मुस्लिम:1957)



عَنْ أَبِي أَيُوب رضي الله عنه، قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى  
اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ : "مَنْ فَرَقَ بَيْنَ وَالِدَةٍ وَوَلَدِهَا ، فَرَقَ  
اللهُ بَيْنَهُ وَبَيْنَ أَحَبَّتِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ " . (جامع الترمذى: 1566)

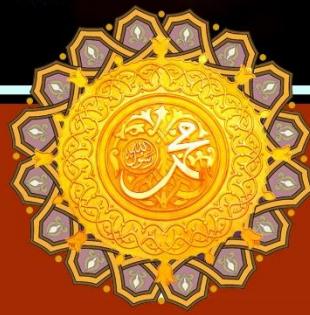
अबू अय्यूब (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैंने अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फ़रमाते हुए सुना: जो व्यक्ति किसी माता और उसके पुत्र के बीच जुदाई पैदा करे क़्रयामत के दिन अल्लाह उसको अपने मित्रों से जुदा कर देगा ।

(तिर्मिज़ी: 1566)



عَنْ أَنَّسٍ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "مَنْ عَالَ جَارِيَتَيْنِ حَتَّى تَبَلُّغَا؛ جَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنَا وَهُوَ". وَضَمَّ أَصَابِعَهُ . (صحيح مسلم: 2631)

अनस इब्न मालिक (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति दो बच्चियों का बालिग होने तक पालन पोषण करे वो और मैं क्रयामत के दिन ऐसे होंगे, (उदाहरण के लिए) आपने अपनी उँगलियों को मिला दिया।  
(सहीह मुस्लिम : 2631)



عَنْ أَبِي ذِرَّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " تَبَسَّمْكَ فِي وَجْهِ أَخِيكَ لَكَ صَدَقَةٌ " .

(جامع الترمذى: 1956)

अबू ज़र (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: अपने भाई के सामने तुम्हारा मुस्कुराना तुम्हारी ओर से सदक़ा (दान/उपहार) है।  
(तिर्मिज़ी: 1956)



عن أبي ذر رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: "إِنَّ إِخْوَانَكُمْ  
خَوْلَكُمْ، جَعَلَهُمُ اللَّهُ تَحْتَ أَيْدِيهِمْ، فَمَنْ كَانَ أَخْوَهُ تَحْتَ يَدِهِ فَلَيُطْعِمَهُ مِمَّا يَأْكُلُ،  
وَلَيُلْبِسَهُ مِمَّا يَلْبِسُ، وَلَا تُكْلِفُوهُمْ مَا يَغْلِبُهُمْ فَأَعْيُنُوهُمْ"

(صحيح البخاري: 2545)

अब ज़र (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: निश्चित रूप से तुम्हारे गुलाम (दास) तुम्हारे भाई ही हैं, भले ही अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे मातहत रखा है, तो जिसका भाई (दास) उसके अधीन हो उसे चाहिए कि वो अपने भाई (दास) को वही खिलाए जो वो खुद खाता हो, वही पहनाए जो वो खुद पहनता हो, उनसे ऐसा काम ना ले जो उन पर भारी पड़ जाए, अगर कोई भारी काम लेना पड़ जाए तो तुम खुद भी उनकी सहायता करो।

(सहीह बुखारी: 2545)



عن أبي هريرة رضي الله عنه قال : قال رسول الله صلى الله عليه وسلم :  
 "لو كان لي مثل أحدي ذهبًا، لسرني أن لا تمر على ثلاث ليالٍ وعندى منه  
 شيءٌ، إلا شيئاً أرصله لدین" (صحيح البخاري: 6445)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:  
 अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुझे इस बात पर खुशी होगी कि तीन दिन बीतने तक मेरे पास उसमें से कुछ ना बचे (अर्थात् पूरा जनहित में बांट दूँ) हाँ किसी के उधार के लिए कुछ रख छोड़ूँ तो बात अलग है।  
 (सहीह बुखारी : 6445)



عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَشَدَّ حَيَاةً مِنَ الْعَذْرَاءِ فِي خَدْرِهَا

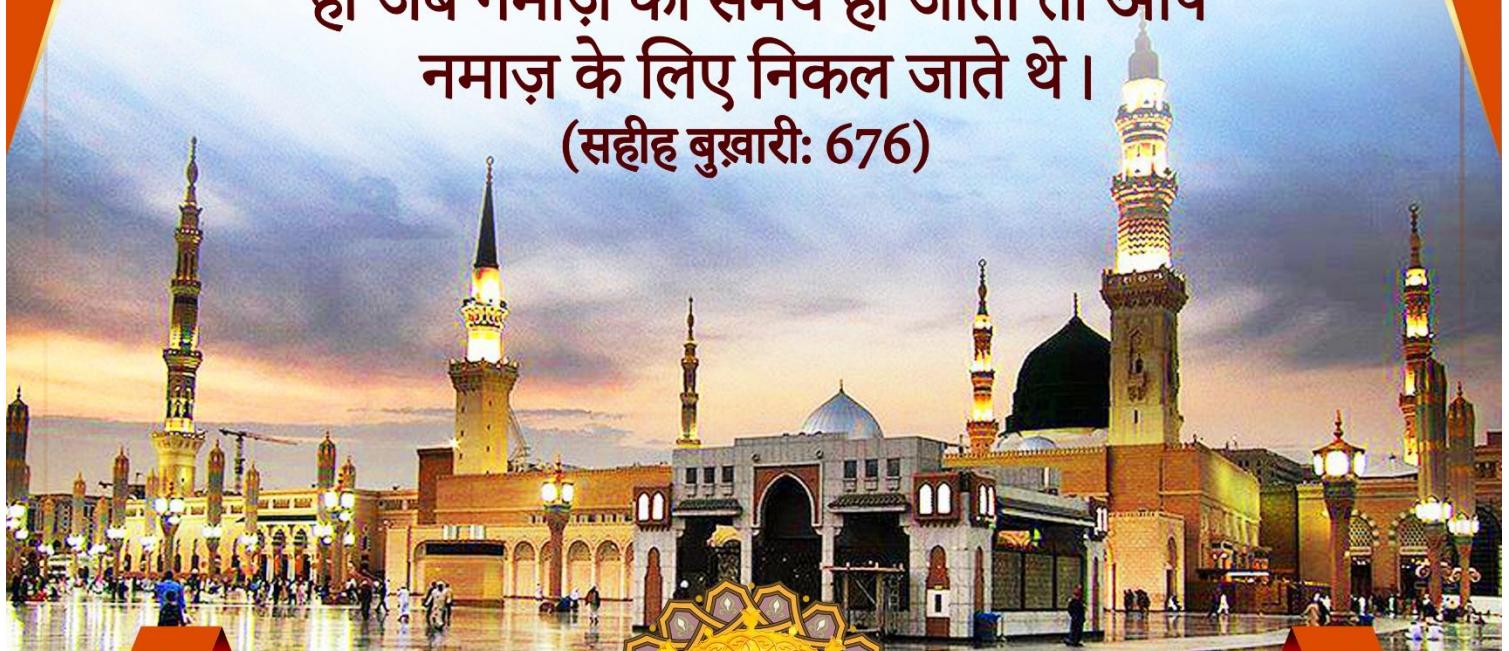
(صحيح البخاري: 3562)

अबू सईद खुदरी (रद्दियल्लाहु अन्ह) कहते हैं कि  
अल्लाह के पैग़ांबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)  
पर्दे में रहने वाली कुंवारी लड़कियों  
से भी ज़्यादा शर्माले थे।  
(सही बुखारी: 3562)



عَنِ الْأَسْوَدِ، قَالَ : سَأَلْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا مَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَصْنَعُ فِي بَيْتِهِ ؟ قَالَتْ : كَانَ يَكُونُ فِي مَهْنَةٍ أَهْلِهِ تَعْنِي خِلْمَةً أَهْلِهِ فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلَاةُ خَرَجَ إِلَى الصَّلَاةِ . (صحيح البخاري: 676)

असवद कहते हैं कि मैंने अम्मा आइशा (रदियल्लाहु अन्हा) से सवाल किया कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने घर में क्या करते थे? तो अम्मा आइशा (रदियल्लाहु अन्हा) ने उत्तर दिया कि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने परिवार के काम में शामिल होते थे, अर्थात् अपने परिवार की सेवा में हाथ बटाते थे, हाँ जब नमाज़ का समय हो जाता तो आप नमाज़ के लिए निकल जाते थे।  
(सहीह बुखारी: 676)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ : قَالَ اللَّهُ : ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصَّهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ : رَجُلٌ أُعْطِيَ بِي ثُمَّ غَدَرَ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرَّاً فَأَكَلَ ثَمَنَهُ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِ أَجْرَهُ .

(صحیح البخاری: 2227)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने कहा: तीन प्रकार के लोग ऐसे होंगे जिनके विरुद्ध क़्रयामत के दिन मैं खुद मुद्रई बनूंगा, एक वो व्यक्ति जिसने मेरे नाम पर वचन दिया फिर उसे तोड़ दिया, दूसरा ऐसा व्यक्ति जिसने किसी आज़ाद/स्वतंत्र इंसान को पकड़कर बेच दिया और उसकी क़ीमत खा ली, तीसरा ऐसा व्यक्ति जिसने किसी मज़दूर को काम पर रखा फिर उससे पूरा पूरा काम लिया और उसकी मज़दूरी ना दी।

(सहीह बुखारी :2227)



عَنْ أَبِي وَائِلٍ ، قَالَ : كَانَ عَبْدُ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يُذَكِّرُ النَّاسَ فِي كُلِّ حَمِيسٍ ، فَقَالَ لَهُ رَجُلٌ : يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ ، لَوْ دَدْتُ أَنْكَ ذَكْرَنَا كُلَّ يَوْمٍ . قَالَ : أَمَا إِنَّهُ يَمْنَعُنِي مِنْ ذَلِكَ أَنِّي أَكْرَهُ أَنْ أُمْلَكُمْ ، وَإِنِّي أَتَخَوَّلُكُمْ بِالْمُوْعِظَةِ كَمَا كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَتَخَوَّلُنَا يَهَا ؛ مَخَافَةُ السَّآمِةِ عَلَيْنَا . (صحيح البخاري: 70)

अबू वाइल कहते हैं कि अब्दुल्लाह इन्न मसऊद (रदियल्लाहु अन्हु) लोगों को हर बृहस्पतिवार को नसीहत किया करते थे, एक व्यक्ति ने उनसे कहा: हे अबू अब्दुर रहमान! मेरी चाहत है कि आप हमें हर रोज़ नसीहत करें, तो अब्दुल्लाह इन्न मसऊद ने उत्तर दिया: इसमें कोई रुकावट नहीं है लेकिन मैं यह बात पसंद नहीं करता कि तुम्हें उक्ताहट में डालूँ, इसी लिए मैं नसीहत के लिए समय का चयन करता हूँ जैसे पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे साथ किया करते थे इस डर से कि कहीं हमारे अंदर उक्ताहट पैदा ना हो।

(सहीह बुखारी: 70)

عَنْ عَبْدِ اللَّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّٰهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللَّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللَّٰهِ، كَمْ نَعْفُوْ عَنِ الْخَادِمِ؟ فَصَمَّتْ، ثُمَّ أَعَادَ عَلَيْهِ الْكَلَامَ فَصَمَّتْ، فَلَمَّا كَانَ فِي الشَّاثِتَةِ قَالَ : " اغْفُوا عَنْهُ فِي كُلِّ يَوْمٍ سَبْعِينَ مَرَّةً ".

(سنن أبي داود: 5164)

अब्दुल्लाह इब्राहिम उमर (रदियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि एक व्यक्ति पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास आया और सवाल किया कि हम कितनी बार अपने सेवक/नौकर को माफ़ करें? पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह सुनकर खामोश रहे, उस व्यक्ति ने दोबारा सवाल किया, आप फिर भी खामोश रहे, तीसरी बार उस व्यक्ति ने सवाल किया तो पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा:  
तुम हर दिन उसे 70 बार माफ़ करो।

(अबू दाऊद: 5164)





عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ :  
"لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالٌ ذَرَّةٌ مِنْ كِبِيرٍ".  
(صحيح مسلم: 91)

अब्दुल्लाह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जिसके दिल में रत्ती बराबर भी घमंड होगा वह जन्मत/स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाएगा।  
(सहीह मुस्लिम: 91)



عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَيْهِ حِمَارٌ قَدْ وُسِمَ فِي وَجْهِهِ، فَقَالَ: "لَعْنَ اللَّهِ الَّذِي وَسَمَهُ".

(صحيح مسلم: 2117)

जाबिर (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सामने से एक गधा गुज़रा जिसके चेहरे पर दाग़ाने का निशान था (पहचान के लिए जानवरों को गर्म लोहे से दाग़ा जाता था) पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: अल्लाह की उस व्यक्ति पर लानत/अभिशाप हो जिसने इस गधे पर दाग़ा कर निशान बनाया है।  
(सहीह मुस्लिम: 2117)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَلَا يُؤْذِي جَارَهُ".

(صحيح البخاري: 5185)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति अल्लाह पर और क्रयामत के दिन पर ईमान (विश्वास) रखे उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी को कोई तकलीफ़ ना पहुंचाए।  
(सहीह बुखारी: 5185)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "الْكَلِمَةُ الطَّيِّبَةُ صَدَقَةٌ".  
(صحيح البخاري: 2989)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: अच्छी बात करना सदक़े (दान, उपहार) का काम होता है।  
(सहीह बुखारी: 2989)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلَكِنَّ الْغِنَى غَمَّ النَّفْسِ".

(صحیح البخاری: 6446)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: धनी होने का मतलब यह नहीं है कि आदमी के पास सम्पत्ति अधिक से अधिक हो बल्कि असल समृद्धि दिल/नफ्स (अंतरात्मा/ज़मीर) की समृद्धि होती है।

(سہیہ بوعسکاری: 6446)



عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "يَا أَبَا ذَرٍّ، إِذَا طَبَخْتَ مَرْقَةً فَاكْثِرْ مَاءَهَا، وَتَعَا هَدْ جِيرَانَكَ".

(صحيح مسلم: 2625)

अबू ज़र (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: अबू ज़र! जब तुम सालन/शोरबा बनाओ तो उसमें पानी ज़्यादा डालो और अपने पड़ोसियों को याद रखो।

(सहीह मुस्लिम: 2625)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ لَا يَأْمُنُ بَجَارَهُ بَوَاقِهِ".

(صحيح مسلم: 46)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: वह व्यक्ति जन्मत/स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा जिसका पड़ोसी उसके अत्याचार और कुकर्मों से सुरक्षित ना हो।

(सहीह मुस्लिम: 46)



إِنَّ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَخْبَرَهُ، أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَاطِعٌ".

(صحيح البخاري: 5984)

जुबैर इब्न मुताइम (रदियल्लाहु अन्हु) ने बताया कि उन्होंने अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फ़रमाते हुए सुना कि: रिश्ते को तोड़ने वाला व्यक्ति जन्मत/स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा।  
(सहीह बुखारी: 5984)



عَنْ أَبْنَى عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "لَيْسَ الْمُؤْمِنُ الَّذِي يَشْبُعُ وَجَارَهُ جَائِعٌ إِلَى جَنْبِهِ" .

(السنن الكبرى للبيهقي: 19730)

ابدھللاھ ایبر ابباس (ردىياللاھ اونھما) سے ور्णित ہے کہ اللہاکے پیغمبر (ساللھللاھ اعلاءہی و ساللما) نے فرمایا: ووکیتی مومین نہیں جو خود پےٹ بھر کر خاۓ اور اسکا پڈوسی بھوکھا سوئے।  
(اس-سُننُ نُوْلَ کُوبَرَا بِهَكْيَ: 19730)



عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرُو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى  
اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّ مِنْ أَخْيَرِ كُمْ أَحْسَنَكُمْ خُلُقًا".

(صحيح البخاري: 6029)

अब्दुल्लाह इब्राहिम (रदीयल्लाहु अन्हुमा) से  
वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु  
अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: तुम में  
सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति वह है जिसका  
चरित्र सबसे अच्छा हो।

(सहीह बुखारी: 6029)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : " لَيْسَ الشَّدِيدُ بِالصَّرَاعَةِ ، إِنَّمَا الشَّدِيدُ الَّذِي يَمْلِكُ نَفْسَهُ عِنْدَ الغُضَبِ " .

(صحیح البخاری: 6114)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: पहलवान वह नहीं जो कुश्ती में किसी को पछाड़ दे बल्कि वास्तविक पहलवान तो वह है जो गुस्से के समय अपने आप को नियंत्रण में रखे।

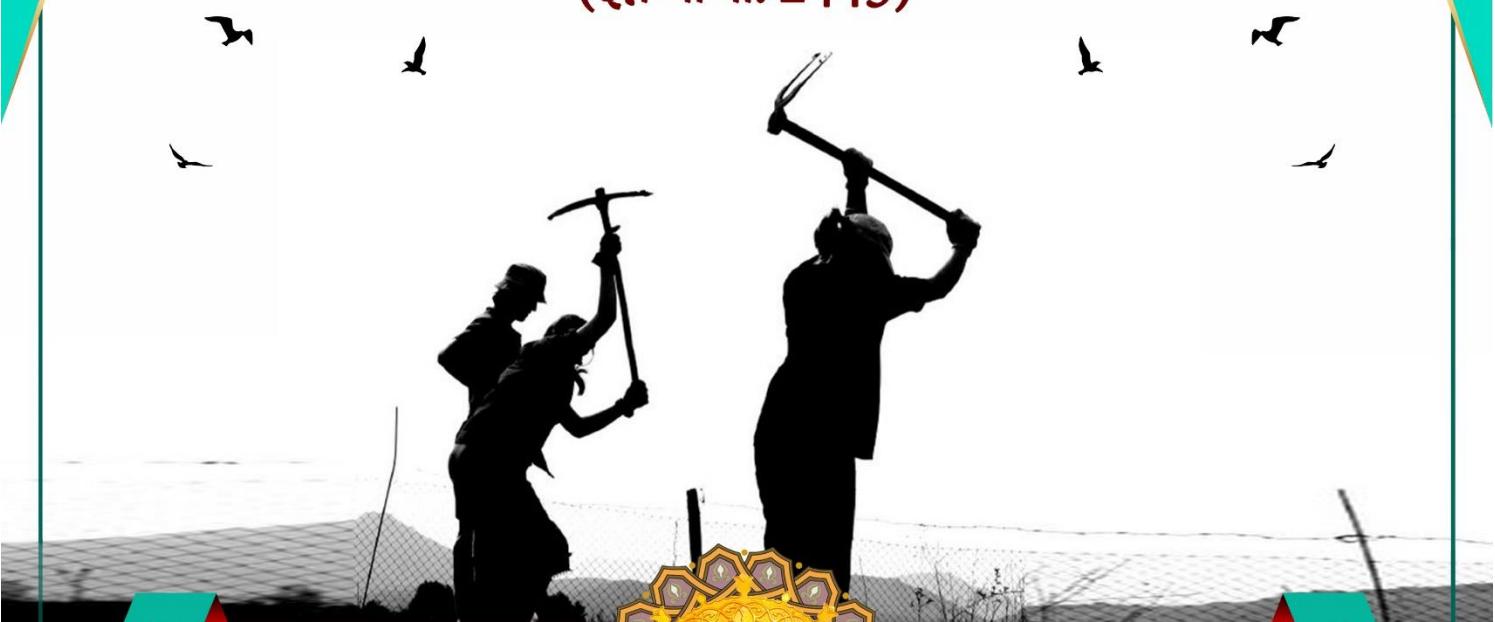
(सहीह बुखारी: 6114)



عَنْ عَبْدِ اللَّٰهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّٰهُ عَنْهُمَا ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّٰهِ صَلَّى اللَّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "أَعْطُوا الْأَجِيرَ أَجْرَهُ قَبْلَ أَنْ يَجْفَ عَرْقُهُ" .

(سن ابن ماجه: 2443)

ابدुल्लाह इब्राहिम (रदियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मज़दूर को उसकी मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले पहले अदा कर दो।  
(इब्राहिम: 2443)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : " إِيَّا كُمْ وَالظَّنَّ ؛ فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلَا تَحْسَسُوا ، وَلَا تَجَسَّسُوا ، وَلَا تَحَاسِدُوا ، وَلَا تَدَأْبُرُوا ، وَلَا تَباغِضُوا ، وَكُونُوا عِبَادَ اللَّهِ إِخْوَانًا ".

(صحیح البخاری: 6064)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: किसी के प्रति (घृणात्मक) अनुमान लगाने से बचो क्योंकि (घृणात्मक) अनुमान सबसे बड़ा झूठ होता है, लोगों के दोष ना तलाशो, आपस में एक दूसरे की जासूसी ना करो, आपस में हसद (अर्थात् किसी की खुशी को बर्दाश्त ना करते हुए समाप्ति की चाहत रखना) ना करो, एक दूसरे को पीठ ना दिखाओ (बात चीत बंद ना करो), आपस में शत्रुता ना रखो, अल्लाह के बंदो! सब आपस में भाई भाई बन जाओ। (सहीह बुखारी: 6064)



عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : "أَبْرُرُ الْبَرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ وُدَّاً إِلَيْهِ" .

(صحيح مسلم: 2552)

अब्दुल्लाह इब्न उमर (रदियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: सबसे उत्तम नेकी/भलाई/पुण्य यह है कि इंसान उस व्यक्ति से भी अच्छा व्यवहार करे जिसके साथ उसके पिताजी ने मोहब्बत का रिश्ता रखा हो (अर्थात् अपने पिताजी के दोस्तों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना एक उत्तम भलाई का काम है)

(सहीह मुस्लिम: 2552)



عَنْ أَبِي مُوسَى الْأَشْعَرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ :  
”وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَا تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ حَتَّى تَرَاهُمُوا قَالُوا : يَا رَسُولَ اللَّهِ كُلُّنَا  
رَحِيمٌ . قَالَ : إِنَّهُ لَيْسَ بِرَحْمَةِ أَحَدٍ كُمْ وَلَكُنْ رَحْمَةُ الْعَامَّةِ رَحْمَةُ الْعَامَّةِ ” .

(المستدرک: 7403)

अबू मूसा अशअरी (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि उन्होंने अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फ़रमाते हुए सुना: तुम उस वक्त तक जन्मत/स्वर्ग में दाखिल नहीं हो सकते जब तक आपस में दया ना करने लगो, लोगों ने कहा: अल्लाह के पैग़ंबर! हम सभी दयालु हैं, आपने फ़रमाया: केवल अपनों में कृपा करने से कोई दयालु नहीं होता, बल्कि उस दया से होता है जो आम हो, (जी हां) उस दया से जो आम हो। (आपने ज़ोर देने के लिए बात दुहराई)

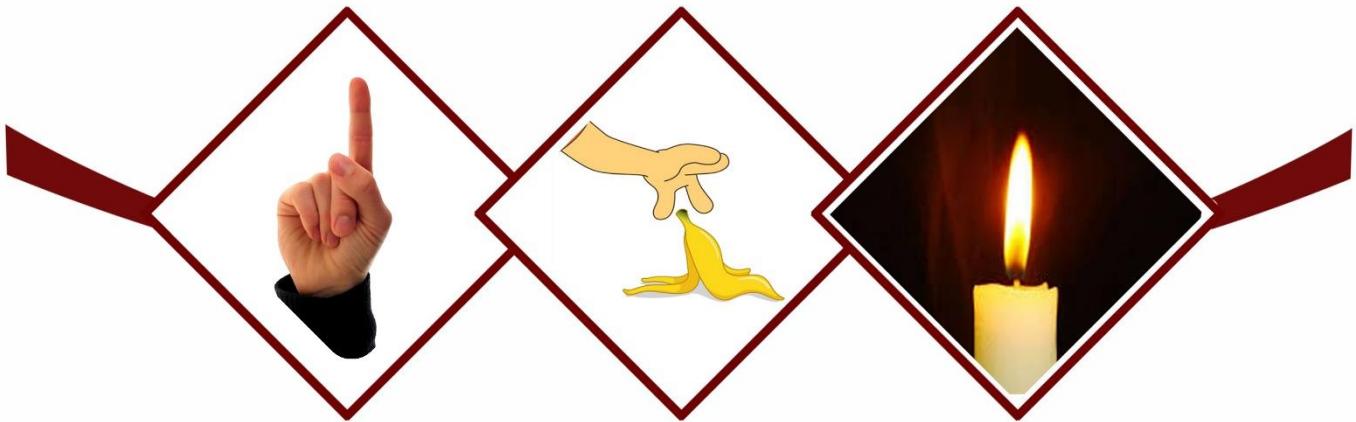
(मुस्तद्रक: 7403)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "إِيمَانٌ بِضُمْنٍ وَسَبْعُونَ أَوْ بِضُمْنٍ وَسِتُّونَ شُعْبَةً، فَأَفْضَلُهَا قَوْلٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَدَنَاهَا إِمَاطَةُ الْأَذَى عَنِ الظَّرِيقِ، وَالْحَيَاةُ شُعْبَةٌ مِنْ إِيمَانٍ".

(صحيح مسلم: 35)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: ईमान की 70 से अधिक शाखाएं हैं (या 60 से अधिक शाखाएं हैं) इनमें सबसे सर्वश्रेष्ठ शाखा ला इलाह इल्लल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत./पूजा/प्रार्थना के योग्य नहीं) कहना है और सबसे निचली शाखा रास्ते से पीड़ादायक चीज़ों को हटाना है जबकि शर्म/हया ईमान की ही एक शाखा है। (सहीह मुस्लिम : 35)



عن أبي هريرة رضي الله عنه قال رسول الله صلى الله عليه وسلم : " لا يُشِيرُ أحدٌ كُمْ إِلَى أَخِيهِ بِالسِّلَاحِ ؛ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي أَحَدٌ كُمْ لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ ، فَيَقْعُمُ فِي حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ " .

(رواہ مسلم : 2617)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: कोई भी व्यक्ति अपने भाई की तरफ़ हथियार से इशारा ना करे क्योंकि कोई इस बात को नहीं जानता कि मुमकिन है शैतान उसके हाथ से हथियार की खींचातानी करे (फिर हत्या हो जाए) और आदमी जहन्नम के गड्ढे में गिर पड़े ।  
(सहीह मुस्लिम: 2617)



عَنْ سَهْلِ بْنِ الْحَنْظَلِيَّةِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : "مَرَّ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعِيرٍ قَدْ لَحِقَ ظَهُورُهُ بِيَطْلُنِيهِ ، فَقَالَ : "أَتَقْوَا اللَّهَ فِي هَذِهِ الْبَهَائِمِ الْمُعَجَّمَةِ ، فَارْكُبُوهَا صَالِحَةً ، وَكُلُّوهَا صَالِحَةً " .

(سنن أبي داود: 2548)

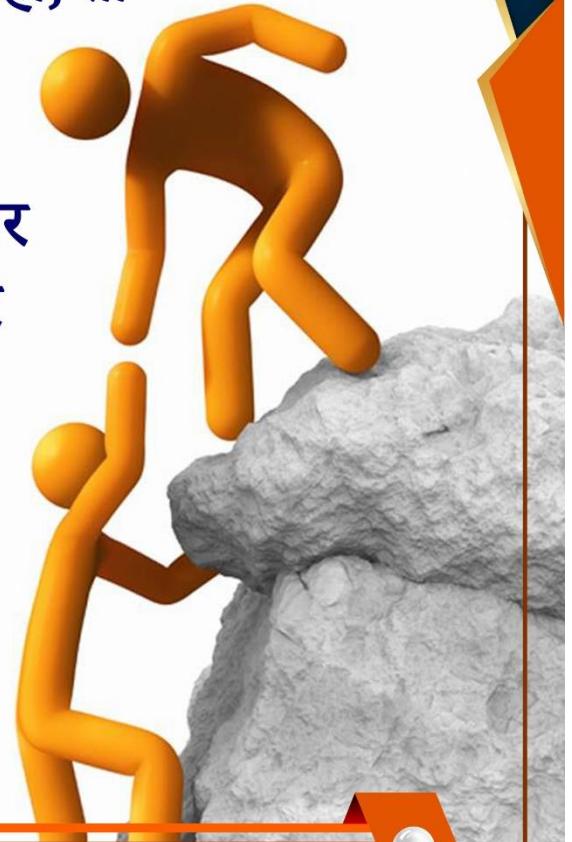
سہل بن الحنظلیہ رضی اللہ عنہ کا کہتا ہے کہ اکابر (رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم) کے پاس سے بوجہ سے لدے چنٹوں کا اک سمحانہ گوڑا، بوجہ کی وجہ سے انکی پیٹ تک آ گئی تھی تو اکابر (صلی اللہ علیہ وسلم) نے فرمایا: ان بے جوبان چوپائیوں کے بارے میں اللہ سے ڈرے، ان پر سواری بھلے انداز میں کرو اور انکو خاومی بھی تو بھلے تریکے سے । (ابو داؤد: 2548)



عَنْ أَنَسِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " اُنْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا " فَقَالَ رَجُلٌ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ، أَنْصُرْهُ إِذَا كَانَ مَظْلُومًا ، أَفَرَأَيْتَ إِذَا كَانَ ظَالِمًا كَيْفَ أَنْصُرُهُ ؟ قَالَ : " تَحْجُزُهُ أَوْ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ ؛ فَإِنَّ ذَلِكَ نَصْرٌ " .

(صحیح البخاری: 6952)

अनस इब्न मालिक (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाया: अपने भाई की मदद करो चाहे वह ज़ालिम (अत्याचारी) हो या मज़लूम (पीड़ित) हो, तो एक आदमी ने पूछा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! जब वह पीड़ित होगा मैं उस समय उसकी मदद करूँगा लेकिन अगर वह अत्याचारी हो तो मैं कैसे मदद कर सकता हूँ? तो आपने कहा: तुम उसे अत्याचार करने से रोकोगे, यही उसके लिए मदद है। (सहीह बुशारी: 6952)



عَنِ ابْنِ عُمَرَ رضيَ اللَّهُ عَنْهُمَا: لَعْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَثَّلَ بِالْحَيَوَانِ. (صحيح البخاري: 5515)

अब्दुल्लाह इब्रा उमर (रदियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उस व्यक्ति पर अभिशाप/लानत भेजी है जो ज़िंदा जानवर के हाथ पेर या कोई अन्य भाग काट ले।  
(सहीह बुखारी: 5515)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ : " جَعَلَ اللَّهُ الرَّحْمَةَ مِائَةً جُزُءًا ، فَأَمْسَكَ عِنْدَهُ تِسْعَةَ وَتِسْعِينَ جُزْءًا ، وَأَنْزَلَ فِي الْأَرْضِ جُزْءًا وَاحِدًا . فَمِنْ ذَلِكَ الْجُزْءِ يَتَرَاحَمُ الْخَلْقُ ، حَتَّى تَرْفَعَ الْفَرْسُ حَافِرَهَا عَنْ وَلَدِهَا ؛ خَشْيَةً أَنْ تُصِيبَهُ ".

(صحیح البخاری: 6000)

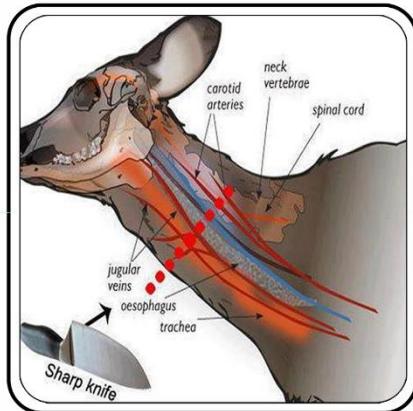
अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैंने अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को फ़रमाते हुए सुना: अल्लाह ने रहमत/मेहरबानी/कृपा के सौ भाग बनाएं हैं, उनमें से 99 भाग अपने पास रखे, सिर्फ एक भाग ज़मीन पर उतारा, इसी के कारण तुम देखते हो कि सब जीव ज़ंतु एक दूसरे पर दया और कृपा करते हैं, यहां तक कि एक घोड़ी भी अपने बच्चे को अपने क़दम नहीं लगने देती बल्कि अपने क़दमों को उठा लेती है कि कहीं उससे उसके बच्चे को तकलीफ़ ना पहुंचे।  
(सहीह बुखारी: 6000)



عَنْ شَدَّادِ بْنِ أُوْسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "إِنَّ اللَّهَ كَتَبَ الْإِحْسَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ، فَإِذَا قَتَلْتُمْ فَأَحْسِنُوا الْقِتْلَةَ، وَإِذَا ذَبَحْتُمْ فَأَحْسِنُوا الْذِبْحَ، وَلْيُحَدَّ أَحَدُكُمْ شَفَرَتَهُ، فَلْيُرِخْ ذِيْحَتَهُ". (صحيح مسلم: 1955)

शद्वाद इब्र औस (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: निश्चित ही अल्लाह ने हर कार्य को अच्छे ढंग से करना अनिवार्य क्रार दिया है, अतः जब तुम वध करो तो अच्छे तरीके से करो, जब तुम ज़िबह करो तो अच्छे ढंग से करो, तुम में से हर एक को चाहिए कि अपनी छुरी को तेज़ कर ले और अपने ज़िबह होने वाले जानवर को (अच्छे ढंग से ज़िबह करके)

**आराम पहुंचाए।** (सहीह मुस्लिम : 1955)



عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : نَهَى رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الضَّرَبِ فِي الْوَجْهِ، وَعَنِ الْوَسْمِ فِي الْوَجْهِ.

(صحيح مسلم: 2116)

जाबिर (रदियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने चेहरे पर मारने से मना किया है और चेहरे पर (गर्म लोहे से) दागने से भी मना किया है।  
(सहीह मुस्लिम: 2116)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ، وَمَا زَادَ اللَّهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا، وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ لِلَّهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللَّهُ". (صحيح مسلم: 2588)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: सदक़ा (दान) माल में कभी कमी नहीं करता, क्षमा करने से अल्लाह बंदे के सम्मान में इज़ाफ़ा करता है और जो भी व्यक्ति अल्लाह के लिए अपने आप को विनम्र करता है अल्लाह उसे बुलंदी प्रदान करता है।

(सहीह मुस्लिम: 2588)

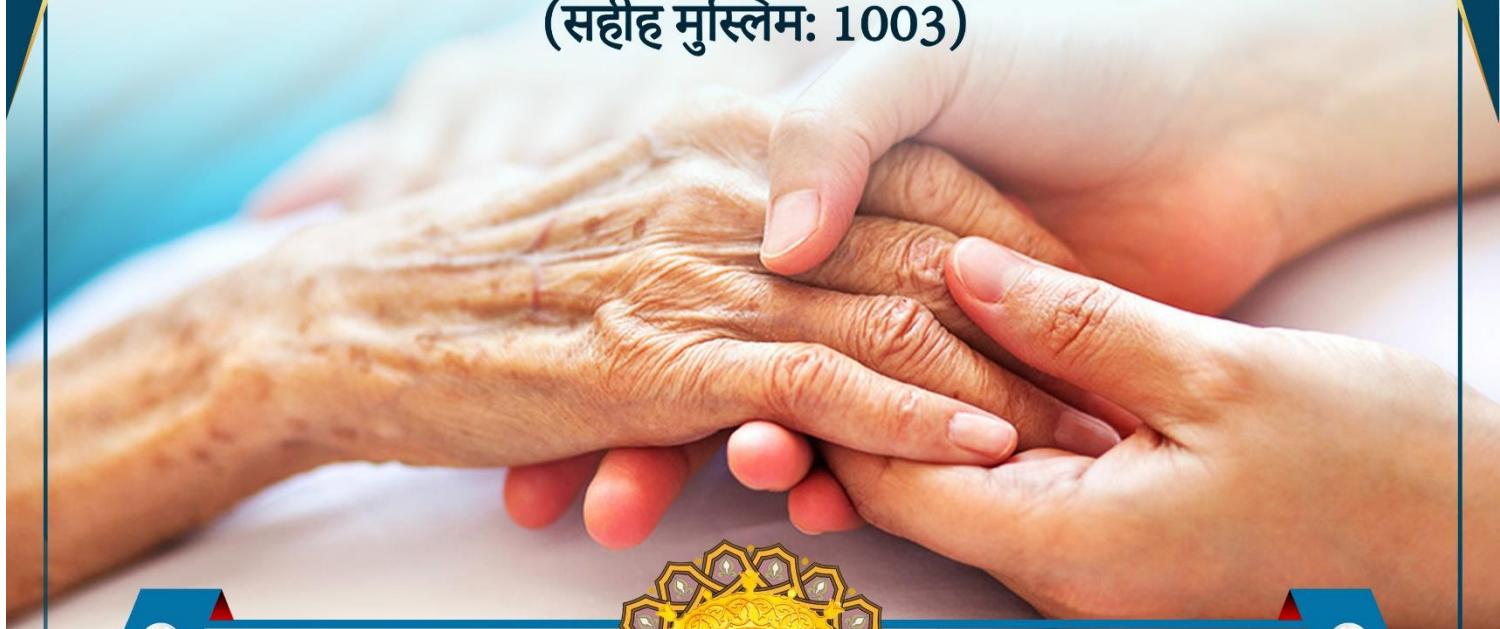


عَنْ أَسْمَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا، قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، إِنَّ أُمِّيَ قَدِمَتْ عَلَيَّ وَهِيَ رَاغِبَةٌ، أَوْ رَاهِبَةٌ، أَفَأَصْلُحُهَا؟ قَالَ: "نَعَمْ".

(صحيح مسلم: 1003)

اسما (رديللاه عندها) कहती हैं कि मैंने पूछा: हे अल्लाह के पैग़ंबर (ساللल्लाहु اलैहि و سल्लم)! मेरे पास मेरी माता आई हैं और वह अभी तक इस्लाम से दूर है, क्या मैं उनके साथ अच्छा व्यवहार करूँ? तो पैग़ंबर (ساللल्लाहु الैहि و سल्लم) ने फ़रमाया: हाँ (अपनी माता के साथ अच्छा व्यवहार करो।)

(سہیہ مسلم: 1003)





عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: "إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ أُمّتِي، كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَجَعَلَ الدَّوَابُّ وَالْفَرَّاشُ يَقْعُنُ فِيهِ، فَأَنَا آخِذُ بِحُجْزِكُمْ، وَأَنْتُمْ تَقْهَمُونَ فِيهِ".

(صحيح مسلم: 2284)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैग़ांबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मेरा और मेरी उम्मत का उदाहरण कुछ ऐसा है जैसे एक व्यक्ति आग रोशन करे फिर उस आग में कीड़े मकोड़े गिरने लगें, मैं तो तुम सब को कमर से पकड़ पकड़ कर आग से बचा रहा हूं और तुम हो कि ज़बरदस्ती उस में गिरे जा रहे हो।

(सहीह मुस्लिम: 2284)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : "مَنْ أَنْظَرَ مُعِسِّراً، أَوْ وَضَعَ لَهُ أَخْلَلَ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَحْتَ خِلْعَرْشِهِ يَوْمَ لَا أَخْلَلُ إِلَّا خَلَلَ". (جامع الترمذى: 1306)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जिसने किसी ग़रीब व्यक्ति की क़र्ज़ अदाएँगी की समयसीमा बढ़ा दी या उसके कर्ज में से कुछ हिस्सा माफ़ कर दिया तो अल्लाह उसे क़यामत के दिन अपने अर्श/सिंहासन की छाया तले स्थान देगा जिस दिन उस छाया के अतिरिक्त कोई और छाया नहीं होगी।

(तिर्मज़ी: 1306)



عَنْ مَعَاذِ بْنِ أَنْسٍ الْجَهْنَمِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ كَظَمَ غَيْظًا وَهُوَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُغْفِرَهُ؛ دَعَاءُ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ عَلَى رُءُوسِ الْخَلَائِقِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُغَيِّرَ اللَّهُ مِنَ الْحُورِ الْعَيْنِ مَا يَشَاءُ".

(سنن أبي داود: 4777)

सहल इब्रामुआज़ अलजुहनी (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति गुस्से को पी जाए - हालांकि वह उस गुस्से के अनुसार कुछ भी कर गुज़रने की शक्ति रखता हो - तो क़्रयामत के दिन अल्लाह उसे लोगों के सामने बुलाएगा और अधिकार देगा कि वह स्वर्ग की जिस हूर/अप्सरा को चाहे चुन ले।  
(अबू दावूद: 4777)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "مَنْ نَفَسَ عَنْ مُسْلِمٍ كُبْرَةٌ مِّنْ كُبْرِ الدُّنْيَا؛ نَفَسَ اللَّهُ عَنْهُ كُبْرَةٌ مِّنْ كُبْرِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ". (سنن أبي داود: 4946)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी मुसलमान का कोई दुनियावी संकट दूर करे अल्लाह उसका एक संकट क़्यामत के दिन दूर कर देगा।  
(अबू दावूद: 4946)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "وَمَنْ يَسِّرَ عَلَى مُعْسِرٍ يَسِّرَ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ".  
(سنن أبي داود: 4946)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो किसी मजबूर पर आसानी करेगा अल्लाह दुनिया और आँखिरत (परलोक) में उस पर आसानी करेगा। (अबू दावूद: 4946)





عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "وَمَنْ سَرَّ عَلَى مُسْلِمٍ سَرَّ اللَّهُ عَلَيْهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ".

(سنن أبي داود: 4946)

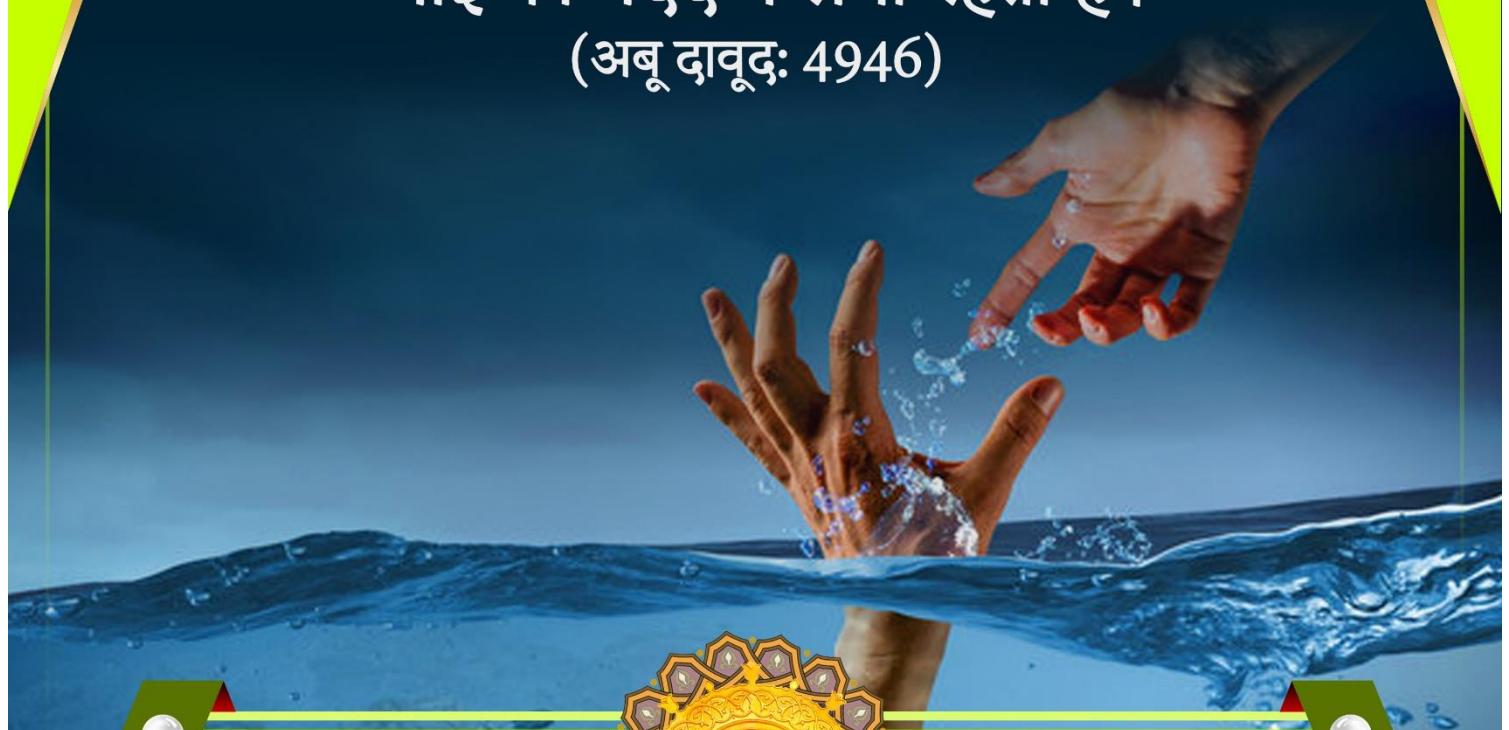
अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी मुसलमान की ख़ामियों पर पर्दा डालेगा अल्लाह दुनिया और आखिरत (परलोक) में उसकी ख़ामियों पर पर्दा डालेगा।  
(अबू दावूद: 4946)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : " وَاللَّهُ فِي عَوْنَى الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِي عَوْنَى أَخْيَهِ " .

(سنن أبي داود: 4946)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: अल्लाह अपने बंदे की मदद में उस वक्त तक लगा रहता है जब तक बंदा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।  
(अबू दावूद: 4946)



عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ ، أَنَّ أَعْرَابِيَاً بَالَّا فِي الْمَسْجِدِ ، فَتَأَذَّلَ إِلَيْهِ النَّاسُ لِيَقْعُوا  
بِهِ ، فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " دَعْوَةُ وَاهْرِيقُوا عَلَى بَوْلِهِ ذُنُوبًا مِنْ  
مَا إِلَّا سَجَّلَ مِنْ مَا إِلَّا فَإِنَّمَا بُعْتَثُمْ مُمِسِّرِينَ ، وَلَمْ تُبَعْثُوا مُعَسِّرِينَ " .

(صحیح البخاری: 6128)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि एक देहाती ने मस्जिद में पेशाब कर दिया, लोग उसकी पिटाई करने के लिए आगे बढ़े तो अल्लाह के पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: उस व्यक्ति को छोड़ दो और उसके पेशाब पर एक डोल पानी बहादो, क्योंकि तुम्हें आसानी करने वाला बनाकर भेजा गया है कठोर बना कर नहीं भेजा गया।

(सहीह बुखारी: 6128)



ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمُوعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلُهُمْ بِالِّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ صَلَّى عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ  
(سورة النحل: 125)

(हे पैगंबर!) आप अपने रब के रास्ते की तरफ बुद्धि और अच्छी सलाह के द्वारा लोगों को आमंत्रित कीजिए और उनके साथ अच्छे ढंग से तर्क क्या कीजिए, निसंदेह आपका रब अपनी राह से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है और हिदायत (सत्य मार्ग) पाने वालों को भी अच्छी तरह जानता है।

(सूरह अन-नह्ल: 125)



فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ

(سورة الغاشية: 21)

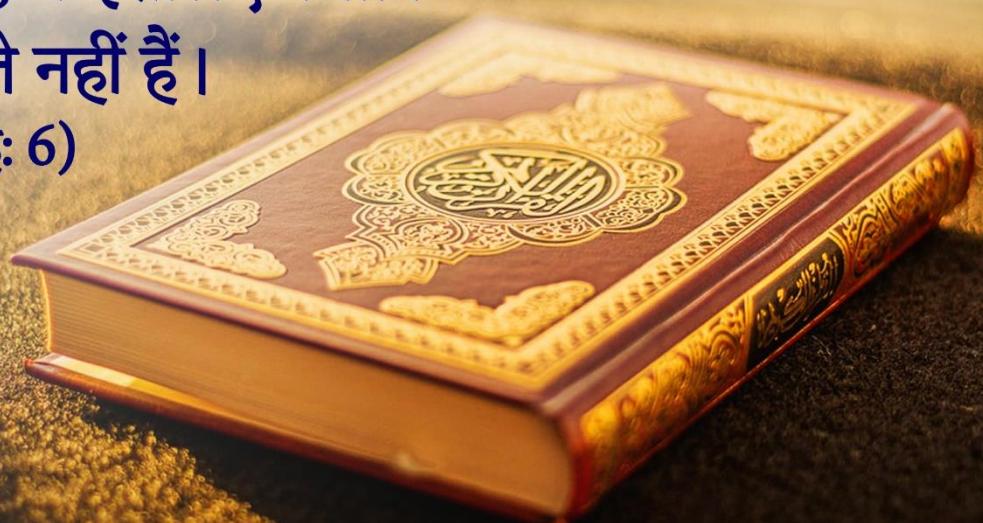
आप नसीहत (अच्छी सलाह) दिया  
करें क्योंकि आप नसीहत (अच्छी  
सलाह) ही देने वाले हैं।  
(सूरह अल-गाशियह: 21)



وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَامَ  
اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَا مَأْمَنَهُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ

(سورة التوبة: 6)

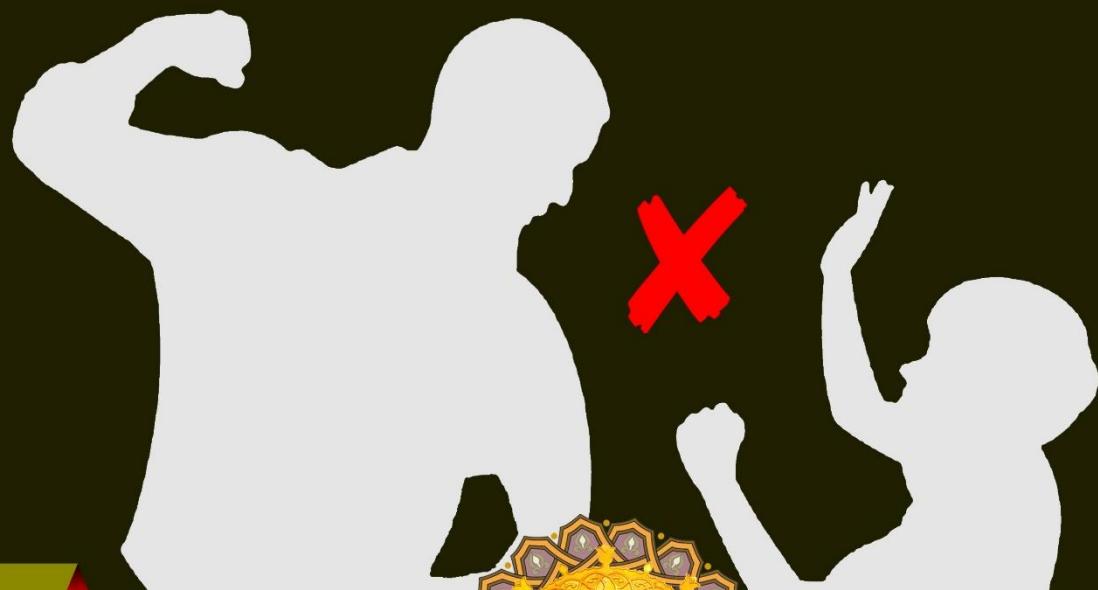
(हे पैगंबर!) अगर आपसे कोई मुश्रिक (गैर मुस्लिम/बहुईश्वरवादी) शरण मांगे तो आप उसे शरण दे दीजिए ताकि वह अल्लाह की वाणी को अच्छी तरह से सुन ले, फिर आप उसे शांतिपूर्ण जगह पर पहुंचा आइए, ये इसलिए क्योंकि ये लोग जानते नहीं हैं।  
(सूरह अत-तौबह: 6)



فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهِرْ

(سورة الضحي: 9)

(हे पैगंबर!) अतः अनाथ पर  
आप सख्ती ना करें।  
(सूरह अद-दुहा: 9)



لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَأَئْنَ السَّهِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَٰةَ وَالْمُؤْمِنُ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَجِينَ الْبَأْسِ اُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ (سورة البقرة: 177)

सारी अच्छाई पूरब और पश्चिम की ओर मुँह करने में नहीं है बल्कि वास्तव में अच्छा वह व्यक्ति है जो अल्लाह पर, क़्रायामत के दिन पर, फरिश्तों पर, अल्लाह की किताबों पर और पैग़ांबरों पर ईमान रखने वाला हो, जो माल से मोहब्बत करने के बावजूद अपने निकटवर्ती रिश्तेदारों, अनाथों, ग़ारीबों, यात्रियों और भिक्षा मांगने वालों को दान देता हो, जो दासों को स्वतंत्र करता हो, नमाज़ की पाबंदी करता हो, ज़कात (वार्षिक दान) की अदाएँगी करता हो, जब कोई वचन दे तो उसे पूरा करता हो, ग़ारीबी, बीमारी, दर्द और लड़ाई के समय सब्र (धैर्य) बनाए रखता हो, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेज़गार हैं।

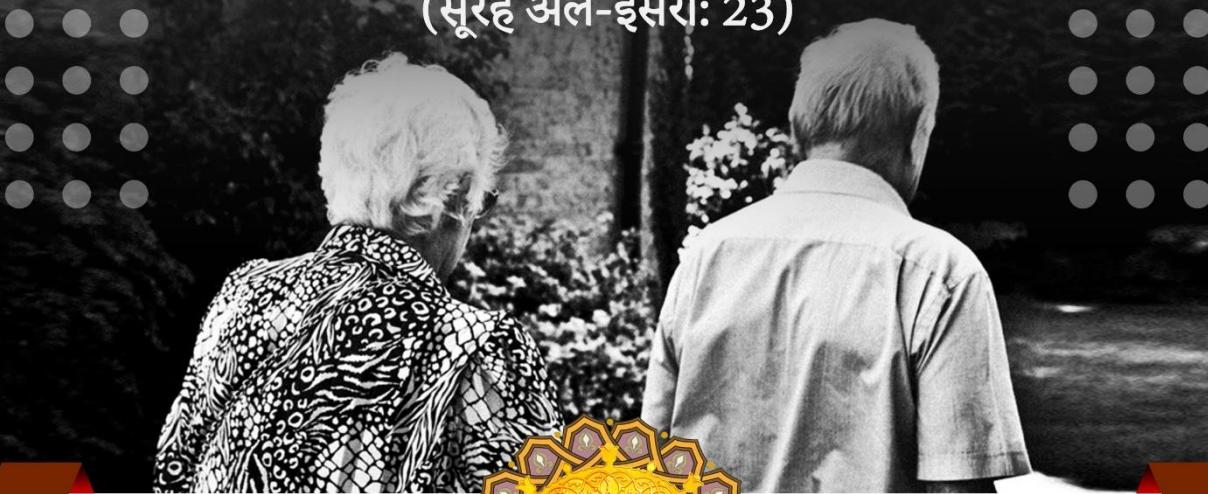
(सूरह अल-ब़क़रह: 177)



وَقَضَى رَبُّكَ أَلَا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِنَّمَا يَمْلَغُونَ  
عِنْدَكَ الْكِبِيرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَّاهُمَا فَلَا تَقْتُلُ لَهُمَا أَفْ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ  
لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا (سورة الإسراء: 23)

(हे नबी!) और आपके रब (पालनहार) ने साफ़-साफ़ आदेश दिया है कि आप उसके अतिरिक्त किसी और की इबादत (पूजा/प्रार्थना/ वंदना) ना करें, माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें, अगर आप की उपस्थिति में उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएँ तो उनके आगे उफ तक ना कहें, ना उन्हें डांट डपट करें, बल्कि उनके साथ सम्मान और अदब के साथ बातचीत करें।

(سُورہ ال-इسرائیل: 23)



# وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تُنَهِّرْ

(سورة الضحى: 10)

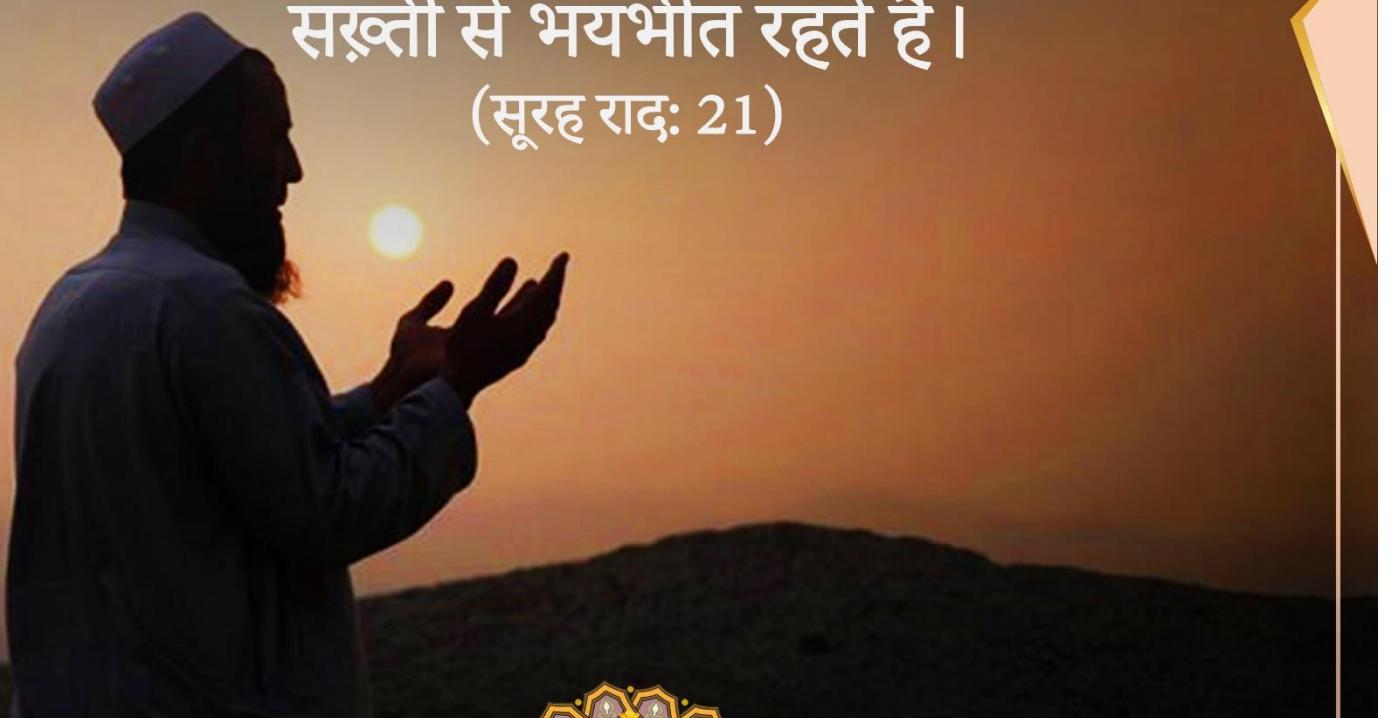
(हे पैग़ंबर!) और आप सवाल करने  
वाले (भिक्षा मांगने वाले) को  
डांट डपट ना करें।  
(सूरह अद-दुहा: 10)





وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمْرَ اللّٰهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشُونَ رَبَّهُمْ  
وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ (سورة الرعد: 21)

और अल्लाह ने जिन चीज़ों को जोड़ने का आदेश दिया है उन चीज़ों को ये लोग जोड़ते हैं और अपने रब (पालनहार) से डरते रहते हैं तथा क्रयामत/प्रलय के दिन हिसाब की सख्ती से भयभीत रहते हैं।  
(सूरह राद: 21)





رَحْمَةً لِلْعَلَيْمِينَ  
دَهْمَاتُلِ الْلِّلَّا اَلَّامِينَ



إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخْوَيْكُمْ وَاتَّقُوا

اللّٰهُ لَعَلَّكُمْ تُرَحَّمُونَ (سورة الحجرات: 10)

(याद रखो) सारे ईमान वाले आपस में भाई भाई हैं,  
अतः दो भाइयों में (अगर झगड़ा हो जाये तो)  
सुलह समझौता कर दिया करो और  
अल्लाह से डरते रहो ताकि  
तुम पर कृपा की जाए।  
(सूरह अल-हुजुरात: 10)



HINDI  
LANGUAGE

92

+966507 472706



@darulhudaudupi

www.darulhudaudupi.org

وَأَخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الْذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا  
كَمَا رَأَيَّا نِي صَغِيرًا (سورة الإسراء: 24)

और माता पिता के सामने विनम्रता का बाजू दया के साथ झुका दो, और दुआ करो कि हे मेरे (पालनहार) रब! तू इन दोनों (माता-पिता) पर वैसे ही कृपा कर जैसा कि इन्होंने बचपन में मेरा पालन पोषण किया था।  
(सूरह अल इसराः 24)



وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ  
كَانَ عَلَيْكُمْ رَّقِيبًا (سورة النساء: 1)

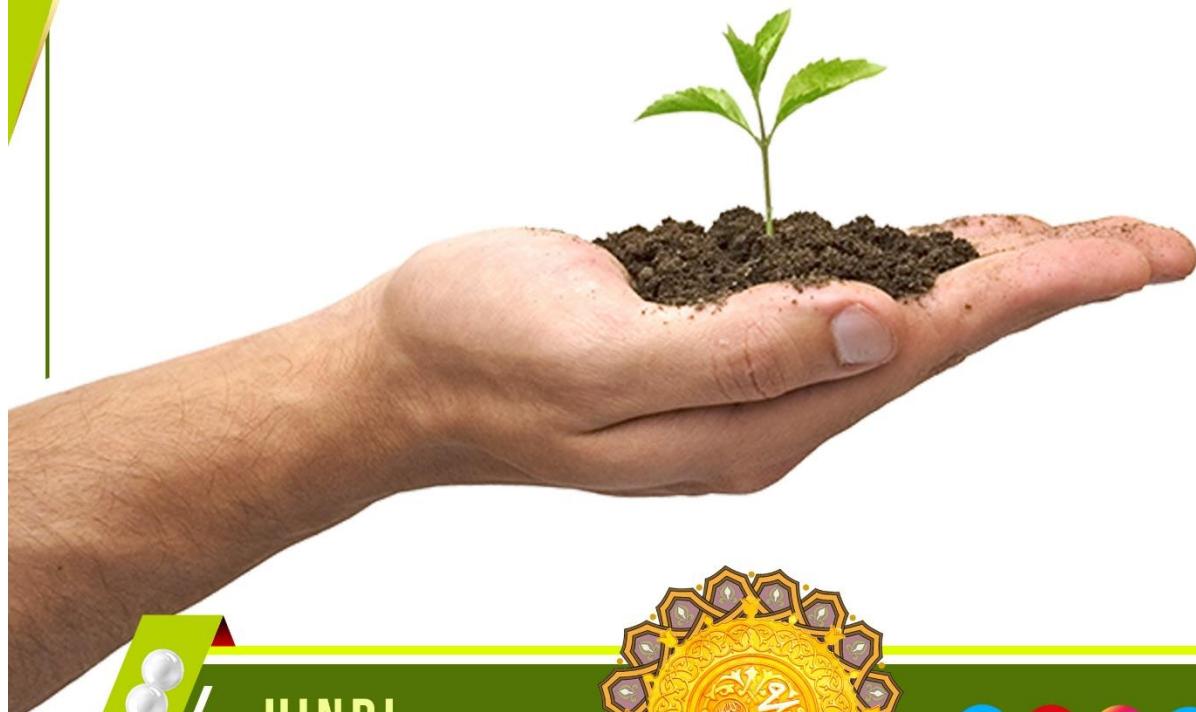
उस अल्लाह से डरो जिसके नाम पर तुम एक  
दूसरे से सवाल करते हो और रिश्ता तोड़ने  
से भी बचो, निसंदेह अल्लाह तुम पर  
नज़र रखे हुए हैं। (सुरह निसा: 1)



عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : " كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ " .

(صحيح البخاري: 6021)

जाबिर इब्न अब्दुल्लाह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : हर भला काम सदक्का (दान/उपहार) है ।  
(सहीह बुखारी: 6021)

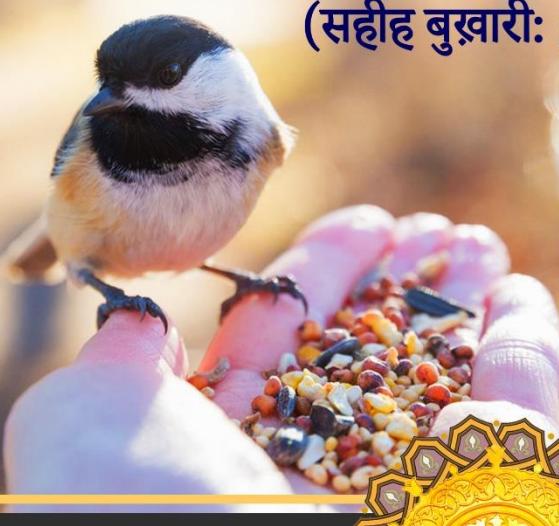


عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ : قُتِلَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْحَسَنَ بْنَ عَلَيْهِ ، وَعِنْدَهُ الْأَقْرَعُ بْنُ حَابِيْسَ التَّمِيمِيُّ جَائِسًا ، فَقَالَ الْأَقْرَعُ : إِنَّ لِي عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ ، مَا قَبَّلْتُ مِنْهُمْ أَحَدًا . فَنَظَرَ إِلَيْهِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ قَالَ : "مَنْ لَا يَرْكِمْ لَا يُرْكِمْ" .

(صحيح البخاري: 5997)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने (अपने नवासे) हसन इब्र अली (रदियल्लाहु अन्हुमा) को चूमा, वहां पर अक़रा इब्र हाबिस तमीमी बैठे हुए थे, उन्होंने कहा मेरे 10 बच्चे हैं, मैंने उन में से किसी एक को भी नहीं चूमा है, तो अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उनकी तरफ़ देखते हुए कहा: जो कृपा नहीं करता उस पर कृपा नहीं की जाती।

(सहीह बुखारी: 5997)



عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ إِذَا أَرَادَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ بِأَهْلِ بَيْتٍ خَيْرًا أَدْخِلْ عَلَيْهِمُ الرِّفْقَ

(مسندأحمد: 24,427)

આઇશા (રદ્દિયલલાહુ અન્હા) કહતી હૈં કે અલ્લાહ કે પૈગંબર (સલ્લાલ્લાહુ અલૈહિ વ સલ્લમ) ને ફરમાયા: જબ અલ્લાહ કિસી ઘર વાલોં કે સાથ અચ્છા મામલા કરના ચાહતા હૈ તો ઉનકે અંદર નર્મી (વાલા ભાવ) પૈદા કર દેતા હૈ।

(મુસનદ અહ્મદ: 24,427)





عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ:  
إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ، (رواه البخاري: 6021)

अबू हुरैरह (रदियल्लाहु अन्ह) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: निसंदेह दीन (इस्लाम धर्म) सरल/आसान है। (सहीह बुखारी: 6021)





رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ  
دَهْمَاتُل لِلِّلَّا مَمِنْ



يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلَقَ الْإِنْسَانُ  
ضَعِيفًا (سورة النساء: 28)

अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करना  
चाहता है और इंसान को कमज़ोर  
पैदा किया गया है।  
(सूरह निसाः 28)



عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: "الْمُسِلِّمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسِلِّمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَبَيْدَاهِ" (رواه البخاري: 10)

अब्दुल्लाह इब्राहिम (रदियल्लाहु अन्हुमा) से वर्णित है कि अल्लाह के पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: सच्चा मुसलमान वो है जिसकी जीभ (अभद्र भाषा) और हाथ से दूसरे मुसलमान सुरक्षित हों। (सहीह बुखारी: 10)

